4

भूगोल-शिक्षण के उद्देश्य

भूगोल के पाठ्यक्रम में स्थान तथा महत्त्व का ज्ञान होने के पश्चात् सफल अध्यापक को उसके शिक्षण के मुख्य उद्देश्यों का ज्ञान होना चाहिए। यह सत्य है कि किसी विषय के शिक्षण-उद्देश्य ही उसकी शिक्षण-विधियाँ निर्धारित करते हैं और सफल अध्यापक अपनी योग्यता तथा शिक्षण की क्षमता द्वारा सदैव उन उद्देश्यों की पूर्ति करने का प्रयत्न करता है।

पाठ्यक्रम के भिन्न-भिन्न विषय किसी-न-किसी सीमा तक शिक्षा के साधारण उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक होते हैं। शिक्षा के उद्देश्य ही विभिन्न विषयों के शिक्षण के उद्देश्य हैं। फिर भी प्रत्येक विषय के कुछ ऐसे विशेष उद्देश्य होते हैं, जिनकी पूर्ति उस विषय के द्वारा ही अधिक सीमा तक सम्भव होती है और उन्हीं को ध्यान में रखकर उस विषय का शिक्षण किया जाता है। यह नियम भूगोल के साथ भी है। भूगोल-शिक्षण के निम्नांकित मुख्य उद्देश्य हैं—

1. भूगोल शिक्षण द्वारा विद्यार्थियों में देश-विदेश के निवासियों के प्रति सच्ची सहानुभूति उत्पन्न की जा सकती है। संसार के विभिन्न भागों का वर्णन, वहाँ के निवासियों के रहन-सहन पर भौगोलिक परिस्थितियों का प्रभाव जानकर हम उनके जीवन को भली-भाँति समझ सकते हैं और हमें यह भी ज्ञात होता है कि संसार के भिन्न-भिन्न देश किस प्रकार कच्चा माल तथा बनी हुई वस्तुएँ भेजकर व्यापार द्वारा एक-दूसरे की सहायता करते हैं और संकट के समय गेहूँ तथा अन्य खाद्य पदार्थों द्वारा दूसरे देशों के निवासियों की जीवन-रक्षा करते हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका तथा आस्ट्रेलिया ने संकट काल में भारत को गेहूँ देकर यहाँ के निवासियों की जीवन-रक्षा की। आज के युग से कोई भी राष्ट्र अकेला 'कूप-मण्डूक' होकर अपना कार्य नहीं चला सकता है, उसकी उन्नति के लिए यह आवश्यक है कि वह मिल-जुलकर, सहयोग से अपना कार्य करें। भूगोल का शिक्षक तथा विद्यार्थी 'सारे संसार को कुटुम्ब' समझता है। उसके हृदय में मानवता के प्रति प्रेम और सहानुभूति जाग्रत हो जाती है। वर्तमान युग में जबकि भयंकर युद्धों से संसार भयभीत हो गया है, इस प्रकार की **'विश्व-बन्धुत्व की भावना'** अत्यन्त आवश्यक है। विश्व में 'एकता की भावना' तथा 'मानवता के प्रति सहानुभूति' उत्पन्न करना भूगोल-शिक्षण के महत्त्वपूर्ण उद्देश्य हैं। इसके आधार पर विद्यार्थी को अपने देश तथा संसार का सुनागरिक बनाया जा सकता है। इस प्रकार विश्व में जनतन्त्र बलवान होता है और प्रत्येक देश के लोगों में अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना, मैत्री, पारस्परिक सहयोग, सुख और शान्ति की वृद्धि होती है।

2. भूगोल सामाजिक विषय का एक अंग है। इसके ज्ञान के आधार पर विद्यार्थी ठीक प्रकार अपने सामाजिक वातावरण का अध्ययन कर सकता है। अपने देश तथा दूसरे देशों की वर्तमान सामाजिक तथा राजनीतिक समस्याओं का अध्ययन, उनकी दशाओं तथा आकांक्षाओं से तथा संसार के घटना-चक्र में उनके महत्त्वपूर्ण स्थान से परिचित कराते हुए उनमें एक विवेकपूर्ण दृष्टिकोण की सृष्टि करना ही भूगोल-शिक्षण का वास्तविक ध्येय होता है। इंग्लैण्ड की स्पेन्स कमेटी की रिपोर्ट (1938) में भली प्रकार भूगोल-शिक्षण के उद्देश्यों की चर्चा की गयी। भूगोल संसार तथा उसमें प्राप्त भिन्न वातावरणों का ज्ञान कराता है, जिससे विद्यार्थियों को सामाजिक तथा राजनीतिक प्रश्नों का यथार्थ ज्ञान होता है और अन्य देशों के निवासियों को आदर की दृष्टि से देखते हैं तथा उनके प्रति हममें सहनशीलता उत्पन्न होती है। अच्छी नागरिकता तथा सामाजिक गुणों के विकास में भूगोल का महत्त्वपूर्ण योगदान है। इस विषय के अध्ययन द्वारा ही हम प्रकृति तथा समाज दोनों में गहरा सम्बन्ध स्थापित करते हैं तथा व्यक्तियों और सामाजिक समुदायों के मध्य रहने वाले अन्योन्याश्रय सम्बन्ध से परिचित होते हैं। इस विषय का अध्ययन करने से छात्रों में सामाजिक चेतना जाग्रत होती है।

संसार के सभी देश अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक-दूसरे पर निर्भर रहते हैं, भारत के उदाहरण से यह स्पष्ट है।

3. भूगोल विश्व-बन्धुत्व की भावना को जाग्रत तो करता ही है, परन्तु देश-प्रेम की भावना को भी प्रोत्साहित करता है। छात्र को अपने देश के भूगोल का अध्ययन करते समय प्रकृति द्वारा दिये हुए गगनचुम्बी विशाल पर्वत, वन, नदियाँ तथा खनिज पदार्थ आदि सुन्दर प्रकृति के वरदानों का अध्ययन करते हैं, जिनके कारण उनका देश उन्नति कर रहा है। इस प्रकार के अध्ययन से बालकों के हृदय में देश-प्रेम उत्पन्न होता है। देश-प्रेम की भावना का अर्थ संकुचित रूप में हमें नहीं समझना चाहिए, परन्तु शिक्षकों को 'मानव-पृथ्वी सम्बन्ध का उदार अवलोकन' करना है। देश-प्रेम की भावना जाग्रत करने के साथ शिक्षक को 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के उच्च आदर्श की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

4. भूगोल के अध्ययन द्वारा शिक्षक को विद्यार्थियों की मानसिक शक्तियों का विकास करना चाहिए। दूसरे देशों के निवासियों के जीवन के विषय में पढ़ते समय बहुधा हमें कल्पना करनी पड़ती है। पिगमीज पेड़ पर अपने मकान किस प्रकार बनाते होंगे, एस्किमो इगलू (बर्फ के बने मकानों) में किस प्रकार रहते होंगे ? विभिन्न प्रकार के देशों के विषय में पढ़ते समय हमें काल्पनिक चित्र बनाने पड़ते हैं। भूगोल-शिक्षक को चाहिए कि वह बालकों की कल्पना-शक्ति का भली प्रकार विकास करे। भौगोलिक सिद्धान्तों के अध्ययन में तर्क, निर्णय तथा निरीक्षण-शक्ति का विकास करे। मुम्बई कपास का तथा रंगून चावल का निर्यात क्यों करता है ? गंगा का मैदान क्यों इतना घना बसा हुआ है तथा राजस्थान की आबादी कम क्यों है ? इन सभी प्रश्नों का निर्णय 'क्या', 'कैसे' और 'क्यों' के आधार पर ही किया जाता है। 'कारण' और 'फल' में सम्बन्ध स्थापित करना भूगोल-शिक्षक का उद्देश्य होना चाहिए, क्योंकि इससे विद्यार्थियों में तर्क तथा निर्णय-शक्ति का विकास होता है। भौगोलिक पर्यटन के समय विद्यार्थियों को भौगोलिक तथा सांस्कृतिक वातावरण की सभी वस्तुओं का निरीक्षण करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। इस प्रकार शिक्षक को भूगोल द्वारा अन्य वैज्ञानिक विषयों की तरह छात्रों की निरीक्षण-शक्ति, कल्पना-शक्ति, तर्क-शक्ति, निर्णय-शक्ति तथा स्मरण-शक्ति आदि मानसिक शक्तियों का विकास करना चाहिए। भौगोलिक तथ्यों की खोज

में भी इन सभी मानसिक शक्तियों का विकास होता है। विद्यार्थियों में स्वतन्त्र रूप से अपने आप सोचने की शक्ति भी उत्पन्न होती है।

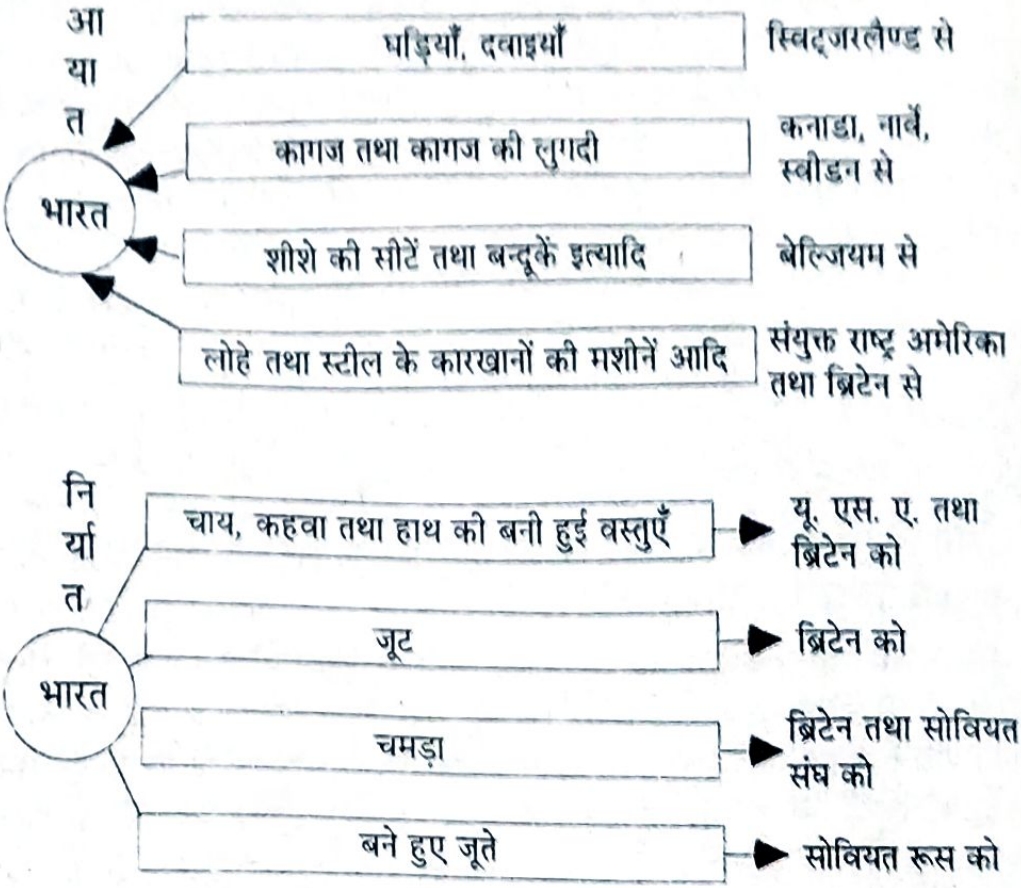

चित्र 2. संसार के देशों की एक-दूसरे पर निर्भरता तथा अन्योन्याश्रय सम्बन्ध

5. भूगोल-शिक्षण का उद्देश्य है कि विद्यार्थियों को ऐसा ज्ञान देना चाहिए, जिससे जीविका कमाने तथा जीवनयापन में सहायता मिले तथा छात्र उस ज्ञान को दैनिक जीवन में विद्योपार्जन काल तथा उसके पश्चात् भी प्रयोग में ला सकें। छात्र को उद्योग-धन्धों के विषय में ज्ञान हो सके तथा इस भौगोलिक ज्ञान को वे वाणिज्य-व्यवसायों, कृषि तथा उद्योग-धन्धों में उपयोग कर सकें। आजकल के युग में बहुत-से जीवन क्षेत्रों में भौगोलिक ज्ञान की आवश्यकता होती है। सफल भूगोल-अध्यापक छात्रों को इस प्रकार का आवश्यक भौगोलिक ज्ञान प्रदान कर इस उद्देश्य की पूर्ति करता है।

6. भूगोल प्रकृति-प्रेम उत्पन्न करता है। कौन ऐसा मनुष्य होगा, जिसका हृदय हिमालय की गगनचुम्बी बर्फ में ढकी हुई चोटियों को देखकर हर्ष से आह्लादित न होता होगा ? सुन्दर हरे-भरे वन तथा उसमें बसने वाले पशु-पक्षी, झरनों का कल-कल नाद हमेशा से मनुष्य की सौन्दर्य-भावना तथा कलात्मक भावना को जाग्रत करता आया है। भूगोल-शिक्षण का कर्त्तव्य है कि छात्रों में उचित रूप से सौन्दर्य भावना का विकास करे।

7. भूगोल-अध्ययन द्वारा छात्रों में यात्रा करने की रुचि, समाचार-पत्रों के पढ़ने की इच्छा, मॉडल बनाने की प्रवृत्ति, स्टाम्प और चित्र एकत्रित करने की इच्छा तथा उनको प्रिय एवं रुचिकर लगने वाले कार्यों को प्रोत्साहित किया जा सकता है। ये सभी कार्य विद्यार्थी

अपने अवकाश-प्राप्त समय में कर सकते हैं। इस प्रकार उनका अवकाश-प्राप्त समय भी व्यर्थ नहीं जाता है।

8. भूगोल मस्तिष्क को विशाल तथा विस्तृत बनाता है, स्थानीय संकुचित क्षेत्र से ऊँचा उठाकर हमें विशाल विश्व रंगमंच की कल्पना कराता है। अनभिज्ञ स्थानों तथा मनुष्यों के विषय में अध्ययन करने से हमारी संकीर्णता, जातीयता तथा पृथकत्व की भावना दूर होती है। पृथ्वी के विशाल विस्तार तथा उसमें होने वाली विभिन्न प्रकार की प्राकृतिक क्रियाओं (वर्षा, भूकम्प, आँधी, ज्वालामुखी उद्‌गार) के विषय में अध्ययन करने से मस्तिष्क उन्नत तथा विस्तृत होता है।

9. भूगोल-शिक्षण का उद्देश्य यह भी है कि आज के छात्रों को जो कल के भावी नागरिक हैं, प्राकृतिक साधनों (भूमि, वन, कोयला, पैट्रोलियम और अन्य बहुमूल्य खनिज पदार्थों) का उचित तथा मितव्ययता से उपयोग करना सिखाना चाहिए। प्रकृति द्वारा दिये हुए वन तथा खनिज-पदार्थ सीमित मात्रा में हैं, उनके शीघ्र समाप्त होने से राष्ट्र में संकटकालीन परिस्थिति उत्पन्न हो सकती है। भूगोल-अध्यापक विद्यार्थियों में इस चेतना को जाग्रत कर सकता है और उन्हें इन बहुमूल्य तथा सीमित मात्रा में प्राप्त होने वाली प्रकृति द्वारा दी हुई वस्तुओं का संरक्षण सिखा सकता है। मनुष्य द्वारा प्राकृतिक साधनों का जो दुरुपयोग भूतकाल में हुआ है, वह किसी से छिपा नहीं है। मनुष्यों द्वारा लापरवाही से वन काटे गये, जिसके दुष्परिणामस्वरूप भूमि कटाव आरम्भ हुआ और उपजाऊ भूमि नदियों द्वारा समुद्र को बहाकर ले जायी गयी। बाढ़ों का प्रकोप हुआ और विभिन्न प्रकार की बीमारियाँ फैलीं। इन सबके फलस्वरूप खेती को अवनति हुई। एक प्राकृतिक साधन—वन के नष्ट होने से कितनी आपत्तियाँ मनुष्य पर आयीं ? इस प्रकार के उदाहरणों द्वारा भूगोल शिक्षक छात्रों को प्रकृति द्वारा दिये हुए इन साधनों का महत्त्व बताकर उन्हें इन सभी प्राकृतिक साधनों का सावधानी से संरक्षण करने की शिक्षा दे सकता है।

10. भौगोलिक ज्ञान की सहायता से आजकल के युग में प्रादेशिक आधार पर 'आर्थिक विकास' की योजनाएँ बनायी जा सकती हैं। प्रादेशिक आधार पर किसी विशाल देश के प्रकृति-दत्त साधनों को ध्यान में रखकर उसे छोटी-छोटी इकाइयों में बाँटा जा सकता है। इन छोटी प्राकृतिक इकाइयों की प्राकृतिक दशा, जल, वायु, वनस्पति, खनिज पदार्थ आदि का अनुमान लगाकर इस क्षेत्र के लिए सफल आर्थिक योजनाएँ बनायी जा सकती हैं। भारत जैसे विशाल देश के लिए, प्राकृतिक प्रदेशों के आधार पर ही छोटे-छोटे भागों में विभाजित करके सफल आर्थिक योजनाएँ बनायी जा सकती हैं। भूगोल का आधुनिक युग में आर्थिक योजनाएँ बनाने में अत्यधिक महत्त्व है।[1]

11. भूगोल-शिक्षण का उद्देश्य है कि वह छात्रों में नित्यप्रति होने वाली राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं में रुचि उत्पन्न करे। भूगोल हमें विभिन्न स्थानों का ज्ञान कराता है, किसी महत्त्वपूर्ण घटना में हमारी रुचि अधिक हो जाती है, यदि हमें उस घटना के होने वाले स्थान की स्थिति का सही ज्ञान होता है। खम्भात की खाड़ी में तेल पाये जाने वाली घटना में हमारी रुचि और भी अधिक हो जाती है, यदि हमें उस स्थान की भौगोलिक स्थिति का ज्ञान होता है,

---

1 Geograhy lies at the basis of all our economic-planning.

चाहे यह ज्ञान केवल मानचित्र देखने से ही क्यों न हो। खाड़ी युद्ध के विषय में हमारी रुचि और भी बढ़ जाती है यदि मानचित्रावली हमारे सामने हो।

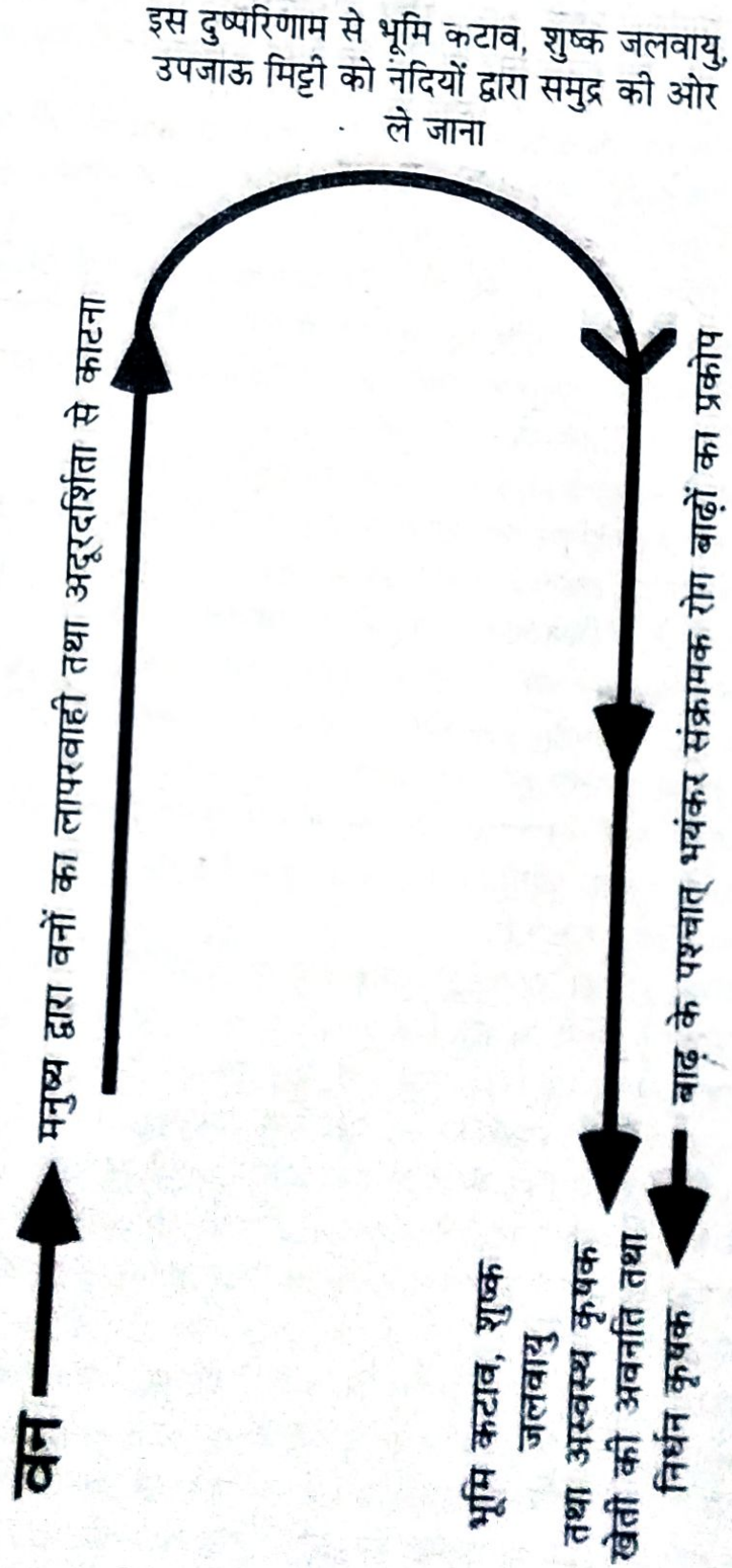

चित्र 3. प्राकृतिक साधनों (वनों) का दुरुपयोग तथा उसके भयंकर परिणाम

12. मानव-जीवन पर पड़े हुए, भौगोलिक परिस्थितियों के प्रभाव को स्पष्ट करना भी भूगोल-शिक्षण का उद्देश्य है। मानव-जीवन पर प्रकृति नियन्त्रण, मनुष्य का स्वयं को प्रकृति के अनुकूल बनाना, भिन्न-भिन्न भागों के निवासियों के जीवन, प्राकृतिक वातावरण के पारस्परिक सम्बन्धों को स्पष्ट करना तथा भौगोलिक तथ्यों, कारणों का निश्चय करना भूगोल-शिक्षण के उद्देश्य हैं।

13. भूगोल-शिक्षण का उद्देश्य है कि वह मनुष्य को स्वयं अपनी तथा अपने वातावरण की तुलना अन्य लोगों से कराने में सहायक हो सके। भूगोल के ज्ञान द्वारा ही मनुष्य संसार में अपनी वास्तविक स्थिति निश्चित करता है और यह बताता है कि अन्य व्यक्तियों के बीच उसका क्या स्थान है, जिससे वह अपने मूल्य को बिना घटाये-बढ़ाये लगाकर अपना यथार्थ महत्व समझ सकता है और अपने से दूसरों की तुलना करके संसार में अन्य लोगों के स्थान तथा महत्व को समझ सकता है। इस ज्ञान की सहायता से वह दूसरों के प्रति नागरिकता के कर्तव्य भली-भाँति पूर्ण कर सकता है।

आज के छात्र भावी नागरिक हैं। भूगोल-अध्यापक को छात्रों को प्राकृतिक साधनों का महत्व बताना चाहिए तथा उनके संरक्षण की शिक्षा भी उन्हें देनी चाहिए। वन जैसे प्राकृतिक साधन को नष्ट करने से मनुष्य पर कितनी आपत्तियाँ आ सकती हैं, यह पिछले पृष्ठ के चित्र से स्पष्ट है। ऐसे बहुत-से उदाहरण चित्रों द्वारा अध्यापक छात्रों के समक्ष रख सकता है तथा उन्हें सीमित एवं बहुमूल्य प्राकृतिक साधनों के संरक्षण की शिक्षा दे सकता है।

प्रोफेसर एस. एल. होल्ट्ज के अनुसार भूगोल-शिक्षण के उद्देश्य

भूगोल-शिक्षण के उद्देश्य

↓

1. व्यावहारिक उद्देश्य	2. सांस्कृतिक उद्देश्य
(i) भूगोल द्वारा स्थल सम्बन्धी ज्ञान।	(i) भूगोल अध्ययन से स्वदेश-प्रेम की उत्पत्ति।
(ii) भौगोलिक ज्ञान द्वारा व्यवसाय, कृषि तथा उद्योग-धन्धों की उन्नति में सहायता।	(ii) प्रकृति-सौन्दर्य का सच्चा आनन्द, प्राकृतिक दृश्यों, शक्तियों एवं जीवधारियों को समझने तथा सराहने में सहायता।
(iii) भूगोल के अध्ययन से जीवन परिस्थितियों के भौगोलिक तथ्यों की सूझ।	(iii) 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का कल्याणकारी पाठ, मनुष्यों में सद्भावना, सहानुभूति तथा सहयोग की भावना जाग्रत होना।
(iv) समाचार-पत्रों और पुस्तकों में आने-जाने वाले भौगोलिक सन्दर्भों का स्पष्टीकरण।	(iv) मानव और पृथ्वी सम्बन्धी दृष्टि से संसार की वस्तुओं का मूल्यांकन।
(v) पर्यटन की इच्छा-जाग्रति।	(v) भौगोलिक परिस्थितियों के अनुसार मानव-जीवन का अनुकूलन।

जेम्स फेयरग्रीव के अनुसार, भूगोल का कार्य भावी नागरिकों को इस भाँति, शि
करना है, जिससे वे विशाल विश्व के रंगमंच की ठीक-ठीक कल्पना कर सकें तथा
प्रकार वे अपने पास-पड़ोस की राजनैतिक तथा सामाजिक समस्याओं के विषय में विवेक
मनन तथा ज्ञान प्राप्त कर सकें।

उपर्युक्त कथन से स्पष्ट है कि भावी नागरिक पाठशालाओं में पढ़ने वाले बालक
बालिकाएँ हैं। विशाल रंगमंच संसार की एकता का द्योतक है तथा उस पर रहने वाला
सजीव, गतिशील तथा क्रियाशील है। इस रंगमंच के केवल वे ही स्थल अधिक महत्त्वपूर्ण
जहाँ अभिनव-कुशल पात्रों की अथवा क्रियाशीलता की बहुलता है। रंगमंच के पट-परि
के समान विशाल रंगमंच की सज्जा भी परिवर्तनशील है। मानवीय प्रकृति के परि
भौतिक सृष्टि पर अपना प्रभाव डालते हैं।[1]

भूगोल में 'शेखचिल्ली' तथा 'परी कहानियों' (Fairy-tales) की कल्पना का
स्थान नहीं है। इस विषय में केवल 'सही कल्पना' का महत्त्व है।

भारतवर्ष की इस समय की विशेष परिस्थितियों को ध्यान में रखकर भूगोल देश-एक
में महत्त्वपूर्ण योगदान कर सकता है। हमारे विशाल देश में विघटनकारी शक्तियाँ बड़ी ही
गति से कार्य करके देश के सामने एक बड़ा खतरा उपस्थित कर रही हैं। कभी भाषा के
पर तो कभी साम्प्रदायिकता के नाम पर हिंसक उपद्रव होते हैं। धर्म और वि
साम्प्रदायिकता तथा तुच्छ जातिवाद इस सुन्दर देश के जीवन से खिलवाड़ कर रहे हैं
जन-जीवन में विष घोल रहे हैं। प्रान्तों के विभाजन की आवाज फिर से उठाई जा रही
ज्ञात होता है कि इस विशाल देश के साथ यहाँ के निवासियों की भावात्मक एकता नहीं
है—राष्ट्रीय एकता खतरे में पड़ गई है—

मुख्य विघटनकारी हानिकारक शक्तियाँ निम्नलिखित हैं—

1. जातिवाद तथा सहस्त्रों उप-जातियाँ।
2. साम्प्रदायिकता।
3. संकुचित धर्म तथा धर्मान्धता।
4. विभिन्न भाषाएँ।
5. विभिन्न जातियाँ (Races)।
6. उत्तर तथा दक्षिण भारत का प्रश्न कभी-कभी मनोमालिन्य उत्पन्न करता है।
7. आर्थिक विषमताएँ।

पंजाब, कश्मीर, असम तथा आन्ध्र प्रदेश की वर्तमान घटनाएँ संकुचित प्रान्तीयता
ओर संकेत करती हैं।

इस कठिन समय में भूगोल का उचित शिक्षण हमारी बहुत कुछ सहायता कर स
है—देश की महानता तथा गौरव बताकर इस देश के निवासियों में देश-प्रेम की ल
दौड़ाकर भूगोल भावात्मक एकता स्थापित कर सकता है। हम सभी उस सुन्दर तथा वि
देश के वासी हैं जहाँ गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र, नर्मदा, ताप्ती, कावेरी आदि नदियाँ हैं। यह स

---

1 "The function of Geography is to train the future citizens to imagine accura
the conditions of the great world stage and thus to help them to think sa
about the political and social problems in the world around him against
geographical background." —*James Fairgri*

देशवासियों की हैं। गगनचुम्बी हिमालय सभी देशवासियों का है। भूगोल प्रदेशों की संकुचित सीमाओं से उठाकर हममें उन्नत, विशाल दृष्टिकोण विकसित कर सकता है। देश के अन्दर हिन्दू, मुसलमान, सिख और ईसाई के प्रश्न को भूगोल नहीं उठने देता है। देश की एकता पर बल देकर भूगोल राष्ट्रीयता की भावना जाग्रत करता है। चम्बल नदी मध्य प्रदेश या राजस्थान की ही नहीं है, वरन् सम्पूर्ण देश की है। इसी प्रकार गंगा, यमुना, नर्मदा, भाखड़ा या दामोदर बाँधों के बारे में कहा जा सकता है। बड़े उद्योगों के बारे में भी कहा जा सकता है। भूगोल के पाठ्यक्रम में ऐसे अनेक स्थल आते हैं, जहाँ संकुचित दृष्टिकोण से ऊपर उठकर एक विशाल तथा उदार और सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण पोषित किया जा सकता है। वही दृष्टिकोण राष्ट्रीय और सामाजिक एकता में योगदान देता है।

भूगोल के ज्ञान की सहायता से हम उत्पादन में वृद्धि कर सकते हैं तथा आधुनिक संसार के साथ प्रगति कर नवीनीकरण में योग दे सकते हैं। साथ ही साथ नवोदित प्रजातन्त्र के लिए सुयोग्य नागरिक बना सकते हैं।

भूगोल-शिक्षण के उद्देश्यों को सारांशत: निम्नलिखित रूप में कहा जा सकता है—

(1) **ज्ञान-प्राप्ति का उद्देश्य**—हमारे प्राकृतिक तथा भौतिक वातावरण के विषय में हमारी ज्ञान-वृद्धि करता है।

(2) **बौद्धिक उद्देश्य**—भूगोल के अध्ययन से आलोचनात्मक विचार-पद्धति का विकास होता है, तर्क-शक्ति तथा कल्पना के विकास में भी भूगोल का महत्त्वपूर्ण योगदान है। छात्र विभिन्न प्रदत्त तथ्यों की एक-दूसरे से तुलना करके 'सामान्यीकरण' के स्तर तक पहुँचता है।

(3) **सांस्कृतिक उद्देश्य**—छात्रों को विभिन्न संस्कृतियों, रीति-रिवाजों तथा परम्पराओं का, कलाओं का और नैतिकता का ज्ञान कराता है। भौगोलिक वातावरण के परिणामस्वरूप किस प्रकार की संस्कृति तथा सभ्यता का विकास हुआ है और किसी देश के निवासी किसी विशेष प्रकार का जीवनयापन क्यों करते हैं ?

(4) **सामाजिक उद्देश्य**—छात्रों में प्रजातन्त्रीय गुणों का विकास भूगोल द्वारा होता है, अच्छी नागरिकता के आदर्श तथा देश-प्रेम की भावना का विकास होता है।

(5) **अन्तर्राष्ट्रीयता की साझेदारी और सूझ-बूझ का विकास**—अन्तर्राष्ट्रीयता तथा विश्व-बन्धुत्व की भावना को प्रोत्साहन देता है। एक देश का दूसरे देश पर निर्भर रहना, देशों का पारस्परिक सहयोग और राष्ट्रों के मध्य भाईचारे की भावना को बढ़ावा देना भूगोल का उद्देश्य है।

(6) **जीविकोपार्जन में सहायता** (Vocational Aim)—शक्ति के साधनों (व्यावसायिक उद्देश्य), खनिज पदार्थों तथा कच्चे माल के विषय में ज्ञान प्रदान कराता है। यह ज्ञान कृषि, उद्योग, व्यापार आदि के लिए अति आवश्यक है।

(7) भूगोल का अध्ययन व्यक्ति के पूर्ण विकास के लिए आवश्यक है। दूसरे ज्ञानों की भाँति यह भी उस उद्देश्य की पूर्ति करता है। अन्त में भूगोल 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना उत्पन्न कर सम्पूर्ण संसार के प्राणियों के प्रति कुटुम्बी जन-मानव की भावना पैदा करता है।

'अयं निज परोवेति गणनायां लघुचेतसां
उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।'

'यह मेरा है वह पराया है', की भावना से छात्र ऊपर उठकर सम्पूर्ण संसार को कुटुम्ब मानने लगते हैं।